# दो मित्र तथा भालू

एक दिन दो मित्र अपना सामान बेचने नगर की ओर जा रहे थे। मार्ग में एक जंगल पड़ता था। जब वे जंगल के मार्ग से जा रहे थे तो वहाँ उन्हें एक बहुत बड़ा तथा काला भालू मिला। दूसरा मित्र तुरन्त पेड़ पर चढ़ गया। पहले मित्र को पेड़ पर चढ़ने का समय ही नहीं मिला। परन्तु तुरन्त ही उसके दिमाग में एक विचार आया। वह जानता था कि भालू कभी भी मरे हुए प्राणी को नहीं खाता है। अतः वह तुरन्त साँस रोककर जमीन पर लेट गया, जिससे भालू मरा हुआ समझे।

भालू उसके निकट आया और उसे सूँघा। वह उसे मरा समझकर आगे बढ़ गया।

भालू के चले जाने के बाद दूसरा मित्र पेड़ पर से उतर आया। उसने अपने मित्र से कहा, 'तुम बाल–बाल बच गये। परन्तु जब भालू तुम्हारे मुँह के इतने पास आया तो तुम्हें डर नहीं लगा?'

'नहीं, मुझे तो तनिक भी डर नहीं लगा,' पहले मित्र ने कहा। 'भालू ने धीरे से मुझे कुछ सलाह दी।'

'सच!' दूसरे मित्र ने आतुरता से पूछा, 'भालू ने क्या कहा?'

दूसरे मित्र ने कहा, 'भालू ने मुझे सलाह दी कि ऐसे मित्र पर कभी विश्वास न करो जो संकट के समय तुम्हारा साथ छोड़ दे।' और तब पहले मित्र को अपनी गलती का एहसास हो गया और तब वे दोनों अपने मार्ग पर आगे बढ़ गये।

*"सच्चा मित्र वही है जो विपत्ति में भी साथ दे।"*

# अभ्यास कार्य

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद की मदद से लिखिए–

प्र.1 दोनों मित्र कहाँ जा रहे थे ?

.....

.....

प्र. 2 उन्हें मार्ग कौन मिल गया ?

.....

.....

प्र. 3 कौन–सा मित्र पेड़ पर चढ़ गया ?

.....

.....

प्र. 4 दूसरे मित्र ने अपनी जान कैसे बचाई ?

.....

.....

प्र. 5 भालू ने दूसरे मित्र को क्या सलाह दी ?

.....

.....

प्र. 6 इस कहानी से हमें क्या सबक मिलता है ?

.....

रवीन्द्र कुमार वर्मा
पी.आर.टी.
के.वि. अनन्तनाग